रोल नं. ☐☐☐☐☐☐☐☐

प्रश्न-पत्र कोड 2/1/1

हिंदी (आधार)

CBSE Class XII Board Examination 2025 — with answers

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

1. प्रश्न-पत्र तीन खंडों – खंड क, खंड ख और खंड ग – में बँटा है; कुल 12 प्रश्न हैं।
2. खंड क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न हैं; इसके सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. खंड ख में पाठ्यपुस्तक 'अभिव्यक्ति और माध्यम' से तथा खंड ग में पाठ्यपुस्तक 'आरोह' और 'वितान' से प्रश्न हैं; इनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
4. तीनों खंडों के प्रश्न करना अनिवार्य है; जहाँ तक हो सके, उत्तर क्रम से लिखिए।
5. जहाँ शब्द-सीमा दी गई है, उत्तर उसी के आसपास रखिए।

खंड – क

अपठित बोध (18 अंक): प्रश्न 1 – अपठित गद्यांश (10 अंक), प्रश्न 2 – अपठित पद्यांश (8 अंक)।

1. *अपठित गद्यांश – प्रकृति और जीवन के अनेक 'रंगों' (सुख-दुख, विविधता, आपसी सहयोग) को स्वीकार करने का संदेश – यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया। इस पर आधारित प्रश्न 1 (i)–(iii) बहुविकल्पीय/कथन-कारण (1-1 अंक), (iv) लघु उत्तर (1 अंक) तथा (v)–(vii) लघु उत्तर (2-2 अंक) हैं।* **10**

2. *अपठित पद्यांश – दीपक के प्रतीक से एक साधारण व्यक्ति की शक्ति, कठिन संघर्ष और अन्याय के अँधेरे को मिटाने का आह्वान – यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया। इस पर आधारित प्रश्न 2 (i)–(iii) बहुविकल्पीय/सुमेलन (1-1 अंक), (iv) लघु उत्तर (1 अंक) तथा (v)–(vi) लघु उत्तर (2-2 अंक) हैं।* **8**

खंड – ख

अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न (22 अंक): प्रश्न 3 – तीन विषयों में से एक पर रचनात्मक लेख (6); प्रश्न 4 – पाँच में से कोई चार (4 × 2 = 8); प्रश्न 5 – तीन में से कोई दो (2 × 4 = 8)।

3. *दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।* **6**

लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए — विषय: ‘हाईवे पर अचानक पिताजी की गाड़ी का रुक जाना’।

उत्तर

आरंभ (घटना का समय-स्थान) → विषय-वस्तु (गाड़ी बंद होना, घबराहट, मदद की तलाश, समाधान) → सीख/अनुभव; भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, लगभग 120 शब्द।

अंक-विभाजन: आरंभ 1, विषय-वस्तु 3, भाषा 1, प्रस्तुति 1।

नमूना उत्तर: पिछली गर्मियों में हम पटना से लखनऊ जा रहे थे। दोपहर का समय था और हाईवे पर दूर-दूर तक कोई ढाबा या बस्ती नहीं थी। अचानक इंजन से अजीब आवाज़ आई और गाड़ी झटके से रुक गई। पिताजी ने कई बार चाबी घुमाई, पर गाड़ी नहीं चली। माँ चिंतित हो गईं, छोटा भाई प्यास से बेचैन था। पिताजी ने संकेतक बत्तियाँ जलाईं, गाड़ी के पीछे चेतावनी त्रिकोण रखा और हेल्पलाइन पर फ़ोन किया। तभी एक ट्रक चालक रुके; उन्होंने बताया कि रेडिएटर का पानी ख़त्म हो गया है। उन्होंने अपनी बोतल से पानी दिया और पास के गैराज तक साथ चले। दो घंटे बाद हम फिर चल पड़े। उस दिन मैंने सीखा कि यात्रा से पहले गाड़ी की जाँच ज़रूरी है और मुसीबत में अनजान लोग भी अपने बन जाते हैं।

ध्यान दें: केवल घटना-वर्णन नहीं, अनुभव और सीख भी लिखें; शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

अथवा

लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए — विषय: ‘बड़े भाई/बहन के विवाह में मेरी भूमिका’।

उत्तर

आरंभ (विवाह का उत्साह) → मेरी ज़िम्मेदारियाँ (निमंत्रण, अतिथि-सत्कार, सजावट, खान-पान की देखरेख) → अनुभव/सीख; लगभग 120 शब्द।

अंक-विभाजन: आरंभ 1, विषय-वस्तु 3, भाषा 1, प्रस्तुति 1।

नमूना उत्तर: दीदी के विवाह की तारीख़ तय होते ही घर में उत्सव जैसा माहौल बन गया। पिताजी ने मुझे निमंत्रण-पत्र बाँटने और अतिथियों की सूची सँभालने का काम सौंपा। मैंने मोहल्ले और रिश्तेदारों तक समय पर कार्ड पहुँचाए। विवाह से दो दिन पहले मैंने दोस्तों के साथ मिलकर घर की सजावट की और रोशनी की व्यवस्था देखी। बारात आने पर मैं स्वागत-द्वार पर खड़ा रहा, बड़ों को आदरपूर्वक बैठाया और भोजन-स्थल पर यह देखता रहा कि किसी को कमी न हो। विदाई के समय मन भारी था, पर संतोष था कि सारी ज़िम्मेदारियाँ ठीक से निभीं। इस अवसर ने मुझे समय-प्रबंधन, टीम के साथ काम करना और परिवार के प्रति कर्तव्य का अर्थ सिखाया।

अथवा

लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए — विषय: ‘सिमटता हुआ जीव-जंतुओं का संसार’।

उत्तर

समस्या (प्रजातियों का घटना) → कारण (वन-कटाई, शहरीकरण, प्रदूषण, शिकार, जलवायु परिवर्तन) → परिणाम (पारिस्थितिक असंतुलन) → उपाय (संरक्षण, अभयारण्य, जागरूकता); लगभग 120 शब्द।

अंक-विभाजन: आरंभ 1, विषय-वस्तु 3, भाषा 1, प्रस्तुति 1।

नमूना उत्तर: कभी हमारे आँगन में गौरैया चहचहाती थी, खेतों में मोर नाचते थे, पर आज ये दृश्य दुर्लभ होते जा रहे हैं। जीव-जंतुओं का संसार तेज़ी से सिकुड़ रहा है। इसका मुख्य कारण मनुष्य का बढ़ता लालच है — जंगल काटकर बस्तियाँ और सड़कें बन रही हैं, नदियाँ प्रदूषित हैं, कीटनाशकों ने कीट-पतंगों और पक्षियों को नष्ट किया है और अवैध शिकार आज भी जारी है। जलवायु परिवर्तन ने भी कई प्रजातियों के आवास छीन लिए हैं। हर प्रजाति प्रकृति की खाद्य-शृंखला की एक कड़ी है; एक कड़ी टूटने से पूरा संतुलन बिगड़ता है। इसलिए वनों का संरक्षण, अभयारण्यों का विस्तार, शिकार पर कड़ी रोक और जन-जागरूकता आवश्यक है। धरती केवल मनुष्य की नहीं, सब प्राणियों की साझा धरोहर है।

4. *नीचे दिए पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।* **8**

(क) जिन बातों को बोलकर कह देना हमें बिल्कुल कठिन नहीं लगता, उन्हीं को लिखने का निमंत्रण हमें चुनौती जैसा क्यों लगता है? (लगभग 40 शब्द)

उत्तर

क्योंकि हमें आत्मनिर्भर होकर लिखित अभिव्यक्ति का अभ्यास नहीं होता; हम रटने और तैयारशुदा सामग्री पर निर्भर रहते हैं।

अंक दिलाने वाले बिंदु (कोई दो):

- स्वयं सोचकर लिखने का अभ्यास न होना — बोलना रोज़ का काम है, लिखना नहीं।
- रटंत विद्या पर निर्भरता, जिससे अभ्यास के अवसर छूट जाते हैं।
- बाज़ार में उपलब्ध तैयार सामग्री पर भरोसा, इसलिए अपना मौलिक लेखन विकसित नहीं होता।

संदर्भ: 'अभिव्यक्ति और माध्यम' — नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन।

(ख) रेडियो नाटक में संवादों की क्या भूमिका होती है? स्पष्ट कीजिए। (लगभग 40 शब्द)

उत्तर

रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है, इसलिए कहानी का विकास, पात्रों का परिचय-स्वभाव और दृश्य/परिवेश — सब संवादों (और ध्वनि) से ही बनता है।

कोई दो बिंदु:

- संवादों से ही कहानी आगे बढ़ती है — रेडियो पर दृश्य दिखाए नहीं जा सकते।
- पात्रों का परिचय, आपसी संबंध, चरित्र और भाव संवादों से प्रकट होते हैं।
- दृश्य, घटनाएँ और वातावरण का बोध भी संवादों व ध्वनि-प्रभावों से कराया जाता है।
- सीमित अवधि में बात कहनी होती है, इसलिए संवाद छोटे और सटीक हों।

(ग) उलटा पिरामिड शैली का विकास कैसे हुआ? संक्षेप में बताइए। (लगभग 40 शब्द)

उत्तर

19वीं सदी के मध्य, अमेरिकी गृहयुद्ध के समय — टेलीग्राफ़ सेवा महँगी, अनियमित और दुर्लभ थी, इसलिए सबसे ज़रूरी सूचना पहले भेजने की यह शैली बनी; बाद में लेखन-संपादन में सुविधा के कारण मानक बन गई।

कोई दो बिंदु:

- उलटा पिरामिड शैली की शुरुआत 19वीं शताब्दी के मध्य में हुई।
- अमेरिका के गृहयुद्ध के दौरान संवाददाता टेलीग्राफ़ से ख़बरें भेजते थे।
- टेलीग्राफ़ सेवा महँगी, अनियमित और कठिनाई से मिलती थी, इसलिए सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य (मुखड़ा) सबसे पहले भेजा जाता था।
- इससे लेखन और संपादन दोनों आसान हुए, इसलिए यह शैली समाचार-लेखन का मानक बन गई।

(घ) आर्थिक मामलों की पत्रकारिता के सामने सबसे बड़ी चुनौती क्या है? (लगभग 40 शब्द)

उत्तर

अर्थ-जगत की तकनीकी और पारिभाषिक शब्दावली को आम पाठक के लिए सरल व रोचक बनाना; साथ ही क्षेत्र की व्यापकता के कारण सब पहलुओं में विशेषज्ञता पाना कठिन है।

कोई दो बिंदु:

- आर्थिक विषयों की शब्दावली तकनीकी और कठिन होती है; उसे आम पाठक की भाषा में समझाना सबसे बड़ी चुनौती है।
- अर्थ-जगत का दायरा बहुत बड़ा है (शेयर बाज़ार, बजट, बैंकिंग, कृषि, उद्योग आदि)।
- इन सभी क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करना कठिन है।

• अर्थ-जगत से जुड़े अलग-अलग पाठकों (निवेशक, व्यापारी, आम उपभोक्ता) की ज़रूरतों का ध्यान रखना पड़ता है।

(ङ) इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की तुलना में मुद्रित माध्यम के पाठकों को कौन-कौन सी सुविधाएँ मिलती हैं? (लगभग 40 शब्द)

उत्तर

स्थायित्व और प्रामाणिकता; सस्ता और आसानी से उपलब्ध; कभी भी, कहीं भी ले जाकर पढ़ने की सुविधा; ख़बर पर रुककर सोचने-विश्लेषण करने की सुविधा।

कोई दो बिंदु:

• छपा हुआ शब्द स्थायी होता है, उसे सहेजकर बार-बार पढ़ा जा सकता है; वह अधिक प्रामाणिक माना जाता है।

• अख़बार-पत्रिका सस्ते और सहज उपलब्ध हैं।

• पाठक अपनी सुविधा से कभी भी, कहीं भी पढ़ सकता है; पढ़ने की गति स्वयं तय करता है।

• किसी ख़बर पर रुककर चिंतन, विचार और विश्लेषण किया जा सकता है।

• लिखित भाषा का विस्तार और भाषा-ज्ञान बढ़ता है।

5. *नीचे दिए तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए।* **8**

(क) व्यक्तिचित्र फीचर को रोचक, पठनीय और प्रभावशाली ढंग से कैसे तैयार किया जा सकता है? (लगभग 80 शब्द)

उत्तर

जीवन की दिशा बदलने वाली घटना या ताज़ा उपलब्धि से आरंभ; फिर पिछले संघर्षों की ओर; निकट लोगों/विशेषज्ञों के रोचक कथन; अहम घटनाएँ व्यक्ति के अपने शब्दों में; अंत में भविष्य की योजनाएँ-चुनौतियाँ।

कोई चार बिंदु (प्रत्येक 1 अंक):

• व्यक्ति के जीवन की दिशा बदल देने वाली किसी घटना से फीचर की शुरुआत करें, ताकि पाठक तुरंत जुड़ जाए।

• उसकी ताज़ा उपलब्धि के ब्योरे से शुरू करके धीरे-धीरे पिछले जीवन और संघर्षों की ओर ले जाएँ।

• उसके परिवार, मित्रों और उसके काम को जानने वाले विशेषज्ञों के दिलचस्प कथन उद्धृत करें।

• जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों की एक-दो घटनाएँ उसी व्यक्ति के शब्दों में प्रस्तुत करें।

• अंत में उसकी भविष्य की योजनाओं, चुनौतियों और तैयारी का उल्लेख करें।

भाषा सजीव, चित्रात्मक और कथात्मक रखें।

(ख) संवाददाता और विशेष संवाददाता में क्या अंतर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। (लगभग 80 शब्द)

उत्तर

संवाददाता अपनी बीट की सामान्य घटनाओं/समाचारों को कवर करता है; विशेष संवाददाता किसी विशेष क्षेत्र की गहरी जानकारी के साथ विश्लेषणात्मक, विशेषीकृत रिपोर्टिंग करता है। उदाहरण: शेयर बाज़ार की गिरावट।

अंतर (2 अंक):

• संवाददाता — अपने क्षेत्र या बीट की सामान्य घटनाओं और समाचारों के तथ्य जुटाकर रिपोर्ट बनाता है।

• विशेष संवाददाता — किसी ख़ास विषय (अर्थ, खेल, विदेश, विज्ञान आदि) का जानकार होता है और घटना की पृष्ठभूमि, कारण व प्रभाव का विश्लेषण करते हुए रिपोर्ट लिखता है।

उदाहरण (2 अंक): शेयर बाज़ार में भारी गिरावट आने पर संवाददाता सूचकांक कितना गिरा, कौन-से शेयर टूटे — ऐसे तथ्यों की रिपोर्ट देगा; जबकि विशेष संवाददाता यह भी समझाएगा कि गिरावट क्यों आई और आम निवेशकों पर इसका क्या असर पड़ेगा।

(ग) कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय उसके पात्रों का रूपांतरण किस प्रकार किया जा सकता है? (लगभग 80 शब्द)

उत्तर

पात्रों का दृश्यात्मकता से मेल; भाव-भंगिमाओं और तौर-तरीकों से प्रभाव; मनोभाव स्वगत कथन/वॉयस ओवर से; लंबे संवाद छोटे; परिस्थिति-परिवेश के अनुसार; वेशभूषा, मंच-सज्जा, ध्वनि-प्रकाश से चरित्र उभारना।

कोई चार बिंदु (प्रत्येक 1 अंक):

• कहानी में वर्णित पात्र को मंच पर दिखने योग्य बनाना — पात्र दृश्य के अनुरूप हों।

• पात्रों की भाव-भंगिमा, चाल-ढाल और बोलने के ढंग से उनका स्वभाव प्रकट करना।

• कहानी में जो मन की बातें वर्णन से कही गई थीं, उन्हें स्वगत कथन या वॉयस ओवर से प्रस्तुत करना।

• कहानी के लंबे संवादों को छोटा, सहज और नाटकीय बनाना।

• परिस्थिति, परिवेश और कथानक के अनुसार पात्रों के व्यवहार को ढालना।

• वेशभूषा, मंच-सज्जा, ध्वनि और प्रकाश के माध्यम से चरित्र को उभारना।

खंड – ग

पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न (40 अंक): प्रश्न 6 और 9 – पठित अंश पर बहुविकल्पीय (5 × 1 = 5 प्रत्येक); प्रश्न 7 और 10 – तीन में से कोई दो (2 × 3 = 6); प्रश्न 8 और 11 – तीन में से कोई दो (2 × 2 = 4); प्रश्न 12 – तीन में से कोई दो (2 × 5 = 10)।

6. *तुलसीदास की 'कवितावली' के पठित काव्यांश (अंश यहाँ नहीं दिया गया) पर आधारित: कवि कहते हैं कि लोग उन्हें धूर्त, अवधूत या किसी भी जाति का कहें, उन्हें किसी से जाति या विवाह का नाता नहीं जोड़ना; वे केवल राम के दास हैं और माँगकर खाने, मस्जिद में सोने में भी संतुष्ट हैं। सबसे उपयुक्त विकल्प चुनिए।* **5**

(क) काव्यांश का मुख्य विषय क्या है?

(A) समाज की आर्थिक स्थिति का वर्णन

(B) जाति-पाँति पर आधारित भेदभाव का वर्णन

(C) समाज में फैले भेदभाव का वर्णन

(D) धर्म के नाम पर होने वाले आडंबरों का वर्णन

उत्तर

(B) जाति-पाँति पर आधारित भेदभाव का वर्णन (अंक-योजना में (C) भी स्वीकार्य)

कवि बताते हैं कि समाज उन्हें धूर्त, अवधूत, राजपूत या जुलाहा — कुछ भी कहे, उन्हें फ़र्क नहीं पड़ता, क्योंकि उन्हें किसी की जाति बिगाड़नी नहीं और न किसी से वैवाहिक संबंध जोड़ना है। यानी अंश जाति-पाँति के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव और लांछन पर केंद्रित है।

अंक-योजना में (B) और (C) — दोनों में से कोई एक विकल्प सही माना गया है।

आर्थिक स्थिति का वर्णन कवितावली के दूसरे छंदों (पेट की आग) में है, इस अंश में नहीं।

(ख) जिस पंक्ति में कवि कहते हैं कि उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे का ब्याह नहीं करना, उसमें व्यंग्य किस पर है?

(A) समाज में फैली जाति व्यवस्था पर

(B) जाति पर आधारित विवाह-प्रथा पर

(C) पुरुष-प्रधान समाज की सोच पर

(D) समाज की विघटनकारी व्यवस्था पर

उत्तर

(B) जाति पर आधारित विवाह-प्रथा पर

उस समय विवाह जाति देखकर ही होते थे और जाति के नाम पर लोगों को अपमानित किया जाता था। तुलसी कहते हैं कि उन्हें अपने बेटे का विवाह किसी की बेटी से करना ही नहीं, इसलिए किसी की जाति बिगड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता। इस तरह वे जाति-आधारित वैवाहिक प्रथा पर कटाक्ष करते हैं।

(ग) तुलसीदास अपने को किसका दास (गुलाम) मानते हैं?

(A) नियमों का

(B) परिस्थितियों का

(C) स्वयं का

(D) राम का

उत्तर

(D) राम का

अंश में तुलसी स्वयं को 'राम का प्रसिद्ध गुलाम' बताते हैं। राम के प्रति अनन्य भक्ति ही उनकी पहचान है, इसलिए समाज की निंदा-प्रशंसा उन्हें प्रभावित नहीं करती।

(घ) कथन (A): रूढ़ियों और परंपराओं से जकड़े समाज में रहते हुए भी तुलसी विकार-रहित, निश्चिंत जीवन जी रहे थे।
कारण (R): वे सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्त थे।
सही विकल्प चुनिए।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(B) कारण सही है, पर कथन गलत है।

(C) कथन सही है, पर कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

उत्तर

(C) कथन सही है, पर कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

कथन सही है — तुलसी समाज की निंदा से बेपरवाह, संतोषी और निर्विकार जीवन जी रहे थे।
पर इसका कारण यह नहीं कि वे 'उत्तरदायित्वों से मुक्त' थे; असली कारण है राम के प्रति उनकी अनन्य भक्ति और सांसारिक लेन-देन से विरक्ति। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(ङ) 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' (किसी से एक लेना नहीं, दो देना नहीं) – इस कथन का आशय क्या है?

(A) न एक लेना, न दो देना

(B) किसी से कोई बुरी बात न कहना

(C) किसी से कोई संबंध न रखना

(D) बिना कारण की मुसीबत होना

उत्तर

(C) किसी से कोई संबंध न रखना

'न लेना एक, न देना दो' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है — किसी से कोई लेन-देन या संबंध न होना। तुलसी कहते हैं कि वे संसार से कोई वास्ता नहीं रखते, इसलिए लोगों की बातों से उन्हें कोई फ़र्क नहीं पड़ता।
सावधानी: विकल्प (A) शब्दशः अर्थ है, भावार्थ नहीं।

7. *नीचे दिए तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।* **6**

(क) 'आत्मपरिचय' (हरिवंशराय बच्चन) कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि संसार की परवाह न करने वाला कवि फिर भी जग-जीवन का भार लिए क्यों फिरता है / उससे पूरी तरह निरपेक्ष क्यों नहीं रह पाता? (लगभग 60 शब्द)

उत्तर

समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा होता है; संसार ही कवि की पहचान और परिवेश है, इसलिए वह उससे पूरी तरह कट नहीं सकता — अलग व्यक्तित्व रखते हुए भी उसका संसार से द्विधात्मक-द्वंद्वात्मक संबंध है।

अंक दिलाने वाले बिंदु:

- कोई भी व्यक्ति समाज से पूरी तरह निरपेक्ष नहीं रह सकता; समाज से उसका संबंध खट्टा-मीठा होता है।
- कवि की अस्मिता, उसकी पहचान का स्रोत और उसका परिवेश यही संसार है।
- इसलिए कवि संसार की झूठी प्रशंसा और स्वार्थ की उपेक्षा करता है, पर संसार के सुख-दुख, प्रेम और पीड़ा को अपने भीतर लिए चलता है।
- कविता में कवि अपने अलग व्यक्तित्व के साथ संसार से अपने 'हाँ भी, ना भी' वाले (द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक) संबंध का मर्म खोलता है।

(ख) 'बात सीधी थी पर' (कुँवर नारायण) कविता की पंक्ति 'भाषा को सहूलियत से बरतने' का अर्थ स्पष्ट कीजिए और बताइए कि कवि ने भाषा की सहजता पर इतना बल क्यों दिया है। (लगभग 60 शब्द)

उत्तर

अर्थ: भाव के अनुरूप सही, सरल शब्दों का प्रयोग करना ताकि रचना सहज बने। क्यों: कठिन, बोझिल और दिखावटी भाषा से अर्थ समझना कठिन हो जाता है; सहज भाषा से भाव सरलता और प्रभाव से पहुँचता है।

अर्थ (1 अंक): कथ्य के भाव के अनुसार ही शब्दों का चयन करना, भाषा को ज़बरदस्ती न मोड़ना-मरोड़ना — तभी रचना में सहजता आती है और भाव संप्रेषित हो पाता है।

क्यों (2 अंक):

- कविता में कवि ने दिखाया कि सीधी बात को प्रभावशाली बनाने के चक्कर में भाषा को उलझाने से बात और उलझ गई, जैसे पेच को ज़बरदस्ती कसने से चूड़ी मर जाती है।
- कठिन और बोझिल भाषा से पाठक अर्थ ग्रहण नहीं कर पाता; पांडित्य-प्रदर्शन रचना को प्रभावहीन बनाता है।
- सहज भाषा से भावाभिव्यक्ति सरल, स्पष्ट और असरदार होती है।

(ग) 'उषा' (शमशेर बहादुर सिंह) कविता में भोर के आकाश में सूर्योदय का गतिशील चित्रण किया गया है — इस कथन की पुष्टि कीजिए। (लगभग 60 शब्द)

उत्तर

कवि ने बदलते रंगों के क्रमिक बिंब दिए हैं — राख से लीपा गीला चौका, लाल केसर से धुली काली सिल, लाल खड़िया मली स्लेट, नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह; अंत में उषा का जादू सूर्योदय के साथ टूट जाता है।

कोई तीन बिंदु:

- भोर का नीला-धूसर आकाश राख से लीपे गीले चौके जैसा लगता है।
- फिर हल्की लालिमा आने पर वह ऐसी काली सिल जैसा दिखता है जिसे थोड़े-से लाल केसर से धो दिया गया हो।
- आगे वह लाल खड़िया-चाक मली स्लेट जैसा लगता है।
- फिर नीले आकाश में उभरती उजली आभा नीले जल में हिलती गौर, झिलमिल देह जैसी लगती है।

• सूर्य उगते ही उषा का यह जादू समाप्त हो जाता है।
इस प्रकार हर पल बदलते रंगों के बिंब इसे गतिशील चित्रण बनाते हैं।

8. *नीचे दिए तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।* **4**

(क) 'बादल राग' (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला') कविता में कहा गया है कि जल-प्लावन (बाढ़) सदा कीचड़ (पंक) पर ही होता है। इस पंक्ति में 'पंक' और 'विप्लव' शब्दों की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। (लगभग 40 शब्द)

उत्तर
पंक = शोषक वर्ग (पूँजीपति, साधन-संपन्न); विप्लव = क्रांति। क्रांति की बाढ़ से शोषक वर्ग का पतन होता है, जबकि छोटे पौधे (शोषित) उससे लहलहाते हैं।

प्रतीक (1 अंक): 'पंक' शोषक, पूँजीपति, साधन-संपन्न वर्ग का प्रतीक है; 'विप्लव' क्रांति का प्रतीक है।
स्पष्टीकरण (1 अंक): जैसे बाढ़ का पानी सदा कीचड़ पर ही चढ़ता है, वैसे ही क्रांति का प्रहार शोषक वर्ग पर होता है और उसका पतन होता है; छोटे पौधों जैसे शोषित-किसान वर्ग के लिए वही क्रांति नवजीवन लाती है।

(ख) 'कैमरे में बंद अपाहिज' (रघुवीर सहाय) कविता में मीडियाकर्मी 'यह अवसर खो देंगे' कहकर किस अवसर के खोने की बात कर रहा है? इससे मीडियाकर्मी के किस व्यवहार का पता चलता है? (लगभग 40 शब्द)

उत्तर
अपाहिज व्यक्ति के लिए अपनी पीड़ा समाज तक पहुँचाने का अवसर (और कार्यक्रम के लिए रोने का दृश्य पाने का अवसर); इससे मीडियाकर्मी की संवेदनहीनता और कोरी व्यावसायिकता झलकती है।

अवसर (1 अंक): शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति को अपनी पीड़ा और तकलीफ़ टीवी के ज़रिए समाज तक पहुँचाने का अवसर — वास्तव में मीडियाकर्मी को अपने कार्यक्रम के लिए उसकी आँखों में आँसू वाला 'मार्मिक' दृश्य चाहिए।
व्यवहार (1 अंक): मीडियाकर्मी की संवेदनहीनता, क्रूरता और केवल टीआरपी/व्यावसायिक लाभ की सोच। वह अपाहिज के दुख को बेचने की वस्तु बना देता है।

(ग) 'पतंग' (आलोक धन्वा) कविता की पंक्ति 'डाल की तरह लचीले वेग से' का आशय स्पष्ट कीजिए। (लगभग 40 शब्द)

उत्तर
पतंग उड़ाते बच्चे पेड़ की लचीली डाल की तरह फुर्तीले और गतिशील होते हैं; वे बिना डरे किसी भी दिशा में तेज़ी से दौड़ते-मुड़ते हैं।

• जैसे लचीली डाल हवा में तेज़ी से झुकती-लहराती है पर टूटती नहीं, वैसे ही पतंग के पीछे भागते बच्चों का शरीर लचीला और गतिशील होता है।
• वे निडर होकर छतों पर किसी भी दिशा में भागते हैं — उनके उत्साह और ऊर्जा की कोई सीमा नहीं।

9. *महादेवी वर्मा के पाठ 'भक्तिन' के पठित गद्यांश (अंश यहाँ नहीं दिया गया) पर आधारित: लेखिका बताती हैं कि भक्तिन में दोष भी हैं – वह इधर-उधर पड़े पैसे भंडार की मटकी में रख देती है और लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बातों को बदलकर बताती है, फिर भी इसे चोरी या झूठ नहीं मानती। सबसे उपयुक्त विकल्प चुनिए।* **5**

(क) गद्यांश में 'नरो वा कुंजरो वा' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?

(A) महाभारत के प्रसंग की जानकारी देने के लिए

(B) भक्तिन को युधिष्ठिर के बराबर रखने के लिए

(C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए

(D) भक्तिन को युधिष्ठिर से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

उत्तर
(C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए

महाभारत में युधिष्ठिर ने 'नरो वा कुंजरो वा' कहकर अधूरा सच बोला था। लेखिका कहती हैं कि भक्तिन सत्यवादी हरिश्चंद्र तो नहीं बन सकती, पर युधिष्ठिर जैसे गोलमोल सच में भी विश्वास नहीं करती — वह तो खुलकर अपनी सुविधा से बात बदल देती है। यह उल्लेख भक्तिन का स्वभाव समझाने के लिए है, महाभारत की कथा बताने के लिए नहीं।

(ख) भक्तिन घर में इधर-उधर पड़े पैसों को मटकी में छिपाकर किस उद्देश्य से रखती थी?

(A) पैसों को सँभालकर रखने के लिए

(B) दूसरे सेवकों की नज़र से बचाने के लिए

(C) आपातकाल में काम आने के लिए

(D) स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझने के लिए

उत्तर
(A) पैसों को सँभालकर रखने के लिए

भक्तिन का तर्क है कि यह उसका अपना घर है; इधर-उधर पड़ा पैसा देखा तो सँभालकर रख दिया — इसमें चोरी कैसी? अतः उसका उद्देश्य पैसे को सुरक्षित सँभालना था।

(ग) थोड़ा-बहुत झूठ बोलने को सही ठहराने के लिए भक्तिन किसे अपना आदर्श मानती थी?

(A) हरिश्चंद्र

(B) यमराज

(C) युधिष्ठिर

(D) महादेवी

उत्तर
(B) यमराज (धर्मराज)

भक्तिन का मानना था कि इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, वरना वे भगवान को प्रसन्न कैसे रखते और संसार कैसे चलाते। धर्मराज यानी यमराज — इसलिए उत्तर (B)।
सावधानी: 'धर्मराज' नाम से युधिष्ठिर समझने की भूल न करें; यहाँ संसार चलाने वाले देवता धर्मराज (यमराज) अभिप्रेत हैं।

(घ) कथन (A): भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा।
कारण (R): वह समय और परिस्थिति के अनुसार मूल तथ्यों में जोड़-घटाव कर देती थी।
सही विकल्प चुनिए।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(B) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।

(C) कथन सही है, किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

> **उत्तर**
> (D) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।
>
> लेखिका स्वयं कहती हैं कि भक्तिन को पूरी तरह अच्छा कहना कठिन है, क्योंकि उसमें दोष हैं। उसका प्रमुख दोष यही है कि वह बातों को अपनी सुविधा और लेखिका की मनोदशा देखकर बदलकर बताती है। अतः कारण कथन को सही ढंग से समझाता है।

(ङ) महादेवी जी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन क्या करती थी?

(A) बहुत मन लगाकर काम करती थी

(B) बातों को ढालकर (बदलकर) बताती थी

(C) उनके सामने ही नहीं आती थी

(D) बातों को साफ़-साफ़ बताती थी

> **उत्तर**
> (B) बातों को ढालकर बताती थी
>
> भक्तिन अपना परम कर्तव्य लेखिका को प्रसन्न रखना मानती थी; जिस बात से उन्हें क्रोध आ सकता था, उसे वह बदलकर, घुमा-फिराकर बताती थी और इसे झूठ नहीं मानती थी।

10. *नीचे दिए तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।* **6**

(क) 'बाज़ार दर्शन' (जैनेंद्र कुमार) पाठ में 'लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए' — यह बात क्यों और किस संदर्भ में कही गई है? (लगभग 60 शब्द)

उत्तर

क्यों: जैसे लू से बचने के लिए शरीर में पानी ज़रूरी है, वैसे ही बाज़ार की चकाचौंध से बचने के लिए मन लक्ष्य (अपनी ज़रूरत की स्पष्टता) से भरा होना चाहिए। संदर्भ: भरे मन पर बाज़ार का जादू नहीं चलता; ऐसा व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता देता है।

क्यों (1 अंक): लू के प्रभाव से बचने के लिए शरीर में तरलता चाहिए; इसी तरह बाज़ार के आकर्षण से बचने के लिए मन का भरा होना — यानी यह पता होना कि हमें क्या चाहिए — आवश्यक है।
संदर्भ (2 अंक, कोई दो बिंदु):
• लेखक कहते हैं कि खाली मन से बाज़ार जाने वाला उसकी चमक में फँसकर अनावश्यक चीज़ें ख़रीद लेता है।
• जिसका मन लक्ष्य से भरा है, उस पर बाज़ार का जादू असर नहीं करता।
• ऐसा व्यक्ति ज़रूरत भर ख़रीदकर बाज़ार को सार्थकता और कृतार्थता देता है; उस पर 'बाज़ारूपन' का असर नहीं होता।

(ख) 'काले मेघा पानी दे' (धर्मवीर भारती) पाठ के संदर्भ में बताइए कि सूखा (अनावृष्टि) दूर करने के लिए गाँव के बच्चों और गाँव वालों द्वारा किए गए उपायों को आप कितना उचित मानते हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए। (लगभग 60 शब्द)

उत्तर

मुक्त उत्तर: इंदर सेना पर पानी फेंकना आस्था/लोकविश्वास और त्याग का प्रतीक है, पर वैज्ञानिक दृष्टि से इससे वर्षा नहीं होती; पानी की कमी में पानी बहाना अनुचित भी लगता है — संतुलित तर्क अपेक्षित।

अंक-योजना: उचित और तर्कपूर्ण मुक्त उत्तर स्वीकार्य।
नमूना उत्तर: पाठ में गाँव के लड़के 'इंदर सेना' बनाकर गली-गली घूमते हैं और लोग सूखे के बीच भी अपने घर का सँजोया पानी उन पर फेंकते हैं। लेखक (बचपन में) इसे पानी की बर्बादी और अंधविश्वास मानता था। मेरी दृष्टि से इसमें लोक-आस्था, सामूहिकता और 'जो चाहिए उसका पहले त्याग करो' का भाव सराहनीय है, जिसे जीजी बुवाई के उदाहरण से समझाती हैं। फिर भी वैज्ञानिक दृष्टि से वर्षा इन टोटकों से नहीं होती; सूखे से निपटने के लिए जल-संरक्षण, वृक्षारोपण और वर्षा-जल संचयन जैसे उपाय अधिक उचित हैं।

(ग) 'शिरीष के फूल' (हजारीप्रसाद द्विवेदी) में लेखक ने शिरीष के माध्यम से कालजयी अवधूत की तरह विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग खड़े रहने की प्रेरणा दी है। इस कथन को स्पष्ट/पुष्ट कीजिए। (लगभग 60 शब्द)

उत्तर

शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी हरा-भरा रहकर फूलता और छाया देता है; अवधूत की तरह सुख-दुख में सम रहता है — हमें भी कठिनाइयों का सामना कर लक्ष्य पाने की प्रेरणा मिलती है।

अंक दिलाने वाले बिंदु:
• जब ग्रीष्म में धरती लू से तपती है और अधिकांश पेड़ मुरझा जाते हैं, तब भी शिरीष अडिग होकर हरा-भरा रहता है, फूलता है और छाया देता है।
• वह अवधूत (संन्यासी) की तरह संसार से विरक्त होकर सुख-दुख में समभाव रखता है; न गर्मी से हारता है, न उत्साह खोता है।
• लेखक के अनुसार मनुष्य को भी विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए, धैर्य और जिजीविषा के साथ

अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए।
संदर्भ के लिए: शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर जीवित रहता है — यह उसकी अजेय जीवनी-शक्ति का प्रतीक है।

11. *नीचे दिए तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।* **4**

(क) 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए — क्या वैश्वीकरण के इस दौर में भगत जी जैसा चरित्र बाज़ार को सार्थकता और समाज में शांति दे सकता है? (लगभग 40 शब्द)

उत्तर
हाँ — भगत जी बाज़ार के आकर्षण में नहीं बँधते, ज़रूरत भर ही ख़रीदते हैं, संतोषी हैं; ऐसा चरित्र बाज़ारूपन, छल-कपट और दिखावे को रोककर समाज में शांति ला सकता है।

कोई दो बिंदु:
• चूरन बेचने वाले भगत जी बाज़ार की चकाचौंध से प्रभावित नहीं होते।
• वे केवल अपनी आवश्यकता की वस्तु (जीरा, नमक) ख़रीदते हैं — यही बाज़ार को सार्थकता देना है।
• उनकी संतोषी प्रवृत्ति (छह आने से अधिक न कमाना) लालच और प्रतिस्पर्धा को कम करती है, जिससे शांति आती है।
• ऐसे लोग बाज़ारूपन, कपट और दिखावे की प्रवृत्ति पर रोक लगाते हैं। आज के उपभोक्तावादी दौर में यह आदर्श और भी प्रासंगिक है।

(ख) 'शिरीष के फूल' पाठ में कबीर को शिरीष के समान क्यों बताया गया है? (लगभग 40 शब्द)

उत्तर
शिरीष की तरह कबीर भी मस्त, फक्कड़, बेपरवाह और सरस थे; दोनों संघर्षों के बीच भी मस्त और अडिग बने रहे।

• शिरीष भीषण गर्मी में भी मस्ती से फूलता है; कबीर भी सांसारिक कष्टों और विरोध के बीच मस्तमौला, फक्कड़ और बेपरवाह रहे।
• शिरीष बाहर से कठोर पर भीतर से कोमल-सरस है; कबीर भी खरी-खरी कहने वाले पर हृदय से सरस थे।
• दोनों विपरीत परिस्थितियों में अडिग रहकर दूसरों को जीवन-रस देते रहे।

(ग) 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' (डॉ. भीमराव आंबेडकर) पाठ के कथन 'दासता केवल क़ानूनी पराधीनता ही नहीं है' का आशय स्पष्ट कीजिए। (लगभग 40 शब्द)

उत्तर
जब किसी व्यक्ति को दूसरों द्वारा तय किया गया व्यवहार, कर्तव्य या पेशा अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनाना पड़े, तो वह भी दासता है — भले क़ानून उसे गुलाम न कहे।

• लेखक के अनुसार दासता का अर्थ केवल क़ानून द्वारा किसी को गुलाम बनाना नहीं है।
• यदि कुछ लोगों को दूसरों के निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़े, तो यह भी दासता है।
• जाति-प्रथा व्यक्ति को जन्म के आधार पर, उसकी रुचि और इच्छा के विरुद्ध पेशा अपनाने को मजबूर करती है — यही छिपी हुई दासता है।

12. *नीचे दिए तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।* **10**

(क) 'सिल्वर वैडिंग' (मनोहर श्याम जोशी) कहानी में कहा गया है कि यशोधर बाबू की विवशता यह है कि वे पुराने को अच्छा मानते हैं और वर्तमान से तालमेल नहीं बिठा पाते। ऐसा क्यों है? क्या उनका यह व्यवहार उचित है? तर्कसहित विचार दीजिए। (लगभग 100 शब्द)

उत्तर

क्यों: किशनदा के आदर्शों का प्रभाव, पारंपरिक रीति-रिवाजों में आस्था, आधुनिक जीवन-शैली को व्यर्थ मानना, परिवार व दफ़्तर के व्यवहार से असंतोष। उचित/अनुचित: मुक्त तर्क — मूल्य अच्छे, पर बदलते समय से कुछ समझौता भी ज़रूरी।

क्यों (2 अंक, कोई दो बिंदु):
- यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से गहराई से प्रभावित हैं और उन्हीं की तरह जीना चाहते हैं।
- वे पुराने रीति-रिवाजों, सादगी और पारंपरिक मान्यताओं में विश्वास रखते हैं।
- बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली, पार्टी, केक काटना, दिखावा उन्हें व्यर्थ लगता है।
- परिवार और दफ़्तर — दोनों जगह के बदले हुए व्यवहार से वे असंतुष्ट हैं।

तर्क (3 अंक, मुक्त उत्तर): उनकी सादगी, ईमानदारी और रिश्तों के प्रति लगाव सराहनीय है; किंतु हर नई चीज़ को नकारना उन्हें परिवार से अलग-थलग कर देता है। समय के साथ अच्छे नए मूल्यों को अपनाना और पुराने श्रेष्ठ मूल्यों को बनाए रखना — यही संतुलित दृष्टि उचित होती। 'समहाउ इंप्रॉपर' कहते रहना उनकी द्वंद्वग्रस्त मनःस्थिति दिखाता है।

(ख) 'जूझ' (आनंद यादव) कहानी आज के युवाओं के लिए विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरक कथा है — उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए। (लगभग 100 शब्द)

उत्तर

आनंदा कठिनाइयों से हार न मानकर लक्ष्य पाता है: माँ और दत्ता जी राव की मदद से पिता को पढ़ाई के लिए मनाना, खेत में काम करते हुए पढ़ना, सहपाठियों की हँसी सहना, अच्छे व्यवहार से सबका दिल जीतना, खेत में काम करते हुए कविता लिखने का शौक पूरा करना।

कोई पाँच बिंदु (प्रत्येक 1 अंक):
- यह कठिन परिस्थितियों से हार न मानकर संघर्ष करते हुए लक्ष्य पाने की कथा है।
- पढ़ाई छूट जाने पर कथानायक आनंदा ने माँ और दत्ता जी राव देसाई की सहायता से अपने पिता को पाठशाला भेजने के लिए राज़ी किया।
- वह खेतों में काम करते हुए भी अपनी पढ़ाई जारी रखता है।
- नई कक्षा में सहपाठियों की खिल्ली और शरारतों को सहन करता है, पर पीछे नहीं हटता।
- अपने अच्छे व्यवहार और लगन से अध्यापकों (मंत्री मास्टर, सौंदलगेकर) और सहपाठियों का दिल जीतता है।
- भैंस चराते और खेत में काम करते हुए भी कविता लिखने का शौक पूरा करता है।

सीख: आज के युवा भी साधनों की कमी को बहाना न बनाकर संकल्प और परिश्रम से आगे बढ़ सकते हैं।

(ग) 'अतीत में दबे पाँव' (ओम थानवी) पाठ में लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल-संस्कृति' किस आधार पर कहा है? वर्तमान समय में जल-संरक्षण क्यों आवश्यक है? (लगभग 100 शब्द)

उत्तर

आधार: नदी के किनारे बसावट और नदी का महत्त्व, लगभग 700 कुएँ, महाकुंड-स्नानागार, जल-संग्रह और पक्की नालियों से निकासी की उत्तम व्यवस्था। आवश्यकता: बढ़ता जल-संकट, जनसंख्या के अनुपात में जल-स्रोतों की कमी, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन से ग्लेशियर पिघलना।

आधार (2 अंक, कोई दो बिंदु):
- सिंधु सभ्यता नदी के किनारे बसी थी; नदी उसके जीवन का केंद्र थी।

• मुअनजो-दड़ो में लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं — पानी की समुचित व्यवस्था।
• महाकुंड (विशाल स्नानागार) और घरों में स्नानघर बने थे।
• पानी के संग्रह और ढकी हुई नालियों से निकासी की उत्तम व्यवस्था थी।
जल-संरक्षण क्यों (3 अंक, कोई तीन बिंदु):
• विश्व-भर में जल-संकट गहराता जा रहा है।
• बढ़ती आबादी के अनुपात में मीठे पानी के स्रोत कम हैं।
• नदियाँ और भूजल प्रदूषित हो रहे हैं।
• जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान से ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जल-स्रोत सूख रहे हैं।
अतः वर्षा-जल संचयन, पानी की बचत और नदियों को स्वच्छ रखना अनिवार्य है।

— समाप्त —

Questions restated from the CBSE Class XII Board Examination 2025 (set 2/1/1) for practice. Reading passages and map items are described, not reproduced.